पाठ 3 **अक्टूबर 14-20**

मानवीय दशा

सब्त अपराह्न **अक्टूबर 14**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें: रोमि० 1: 16,17, 22-32; 2:1-10, 17-23; 3:1, 2, 10-18, 23

याद वचन: *"इसलिए कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं"* (रोमियों 3: 23)।

रोमियों की किताब की शुरूआत में, पौलुस एक निर्णायक सत्य को स्थापित करने की कोशिश करता है, एक जो सुसमाचार के केंद्र में हो - मानवीय दु:खद दशा। यह सत्य विद्यमान है क्योंकि, पाप में गिरने के बाद हम सब पाप से दूषित हो गये हैं। यह हमारे आनुवंशिकता (जीन) में हमारी आँखों के रंग के समान जोड़ा हुआ है।

मार्टिन लूथर ने अपने समकालीन रोमियो पर, इस प्रकार लिखा : यह प्रकटीकरण *'सब पाप के अधीन हैं'* आत्मिक अर्थ में लिया जाना चाहिए; कहने का अर्थ यह कि जैसा मनुष्य अपनी आँखों में दृश्यमान होता है वैसा नहीं अथवा वैसा भी नहीं जैसा दूसरों में, परन्तु वैसा जैसा वे परमेश्वर के सामने खड़े होते हैं। वे सब पाप के अधीन हैं वे जो मनुष्यों की आँखों में पापियों को उजागर करते हैं, वैसा ही जैसा वे जो अपनी दृष्टि में और दूसरों के सामने धर्मी प्रकट होते हैं। वे जो बाहरी तौर पर अच्छे कामों को करते हैं, दण्ड के डर से करते हैं या लाभ और महिमा के प्रेम से, अन्यथा किसी खास वस्तु में खुशी के कारण, परन्तु इच्छित एवं तैयारी मन से नहीं। इस प्रकार मनुष्य वाह्य रूप से स्वयं अच्छे कामों को जारी रखने का अभ्यास करता है, परन्तु मन ही मन वह पूरी तरह पापमय अभिलाषाओं एवं बुरी वासनाओं में लिप्त रहता है, जो अच्छे कामों का विरोध करते हैं।" - *मार्टिन लूथर, कॉमेटरी ऑन रोमनस्, पेज 69*

रविवार **अक्टूबर 15**

परमेश्वर की सामर्थ्य

"क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हरएक विश्वास करने वाले के लिए, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिए, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है। क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिए प्रगट होती है; जैसा लिखा है, *'विश्वास से धर्मीजन जीवित रहेगा।' (रोमि० 1:16,17)*
(रोमियों 1:16,17) आप से क्या कहता है? इनमें पायी जाने वाली प्रतिज्ञाओं और आशा को आपने किस प्रकार अनुभव किया है? इस अनुच्छेद में अनेक संकेत शब्द पाये जाते हैं

- सुसमाचार (Gospel) यह ग्रीक शब्द का अनुवाद है जिसका शाब्दिक अर्थ "शुभ संदेश" या "अच्छा संवाद" होता है। यह शब्द किसी भी अच्छे समाचार का द्योतक है; परन्तु इसपर सुधार लाकर जैसे कि इस अनुच्छेद में है "मसीह का" वाक्यांश से इसका अर्थ होता है "मसीहा के विषय सुसंवाद (मसीह (Christ) ग्रीक शब्द का लिप्यंतरण है जिसका अर्थ "मसीहा" होता है)। सुसमाचार यह है कि मसीहा (मुक्तिदाता) आ गया है, और लोग उसपर विश्वास करने के

द्वारा बचाये जा सकते हैं। यह यीशु में और उसकी संपूर्ण धार्मिकता में है - और हमारे स्वयं में नहीं या परमेश्वर की व्यवस्था में - जिसमें कोई उद्धार पा सकता है।

- **धार्मिकता** (Righteousness) यह शब्द परमेश्वर के साथ "सही" गुण को दर्शाता है। इस शब्द का खास अर्थ रोमियों की किताब में विकसित किया गया है, जिसे हम इस किताब के हमारे अध्ययन के तौर पर जाहिर करेंगे। यह संकेत होना चाहिए कि रोमियों 1:17 में वाक्यांश "परमेश्वर का" द्वारा योग्य ठहराया गया है। यह धार्मिकता है जो परमेश्वर से आती है, धार्मिकता जिसे स्वयं परमेश्वर ने प्रदान किया है। जैसे हम देखेंगे यही एक भाग धार्मिकता है जो हमारे लिए अनंत जीवन की प्रतिज्ञा लाने के लिए काफी है।
- **विश्वास** (Faith) ग्रीक में शब्द जिनका अनुवाद "मानना" और "विश्वास" होता है इस अनुच्छेद में इसी प्रकार के शब्द पिसटिओ (मानना, विश्वास करना), पिसटिस (भरोसा या विश्वास के क्रिया और संज्ञा रूप है। विश्वास का अर्थ जिस प्रकार उद्धार से जुड़ा हुआ है जैसे-जैसे हम रोमियों की किताब के अध्ययन में प्रगति करते हैं यह उजागर होगा।

क्या आप कभी आश्वासन के संघर्ष करते हैं? क्या आपके पास समय है जब आप सच्चाई से प्रश्न करते हैं कि यदि आप बचाए गये हैं या नहीं, या कि आप बचाए जा सकते हैं? ये भय क्या लाते हैं? वे किसमें बचाये जाते हैं? हो सकता है वे वास्तविकता में स्थिर हो गये हैं? यह कि आप उस प्रकार की जीवनशैली जी रहे हैं जो आपके विश्वास करने को इंकार करता है? यदि ऐसा है तो आश्वासनों एवं प्रतिज्ञाओं को जो यीशु में आपके लिए है पाने के लिए आप को कौन-से चुनाव करने चाहिए?

सेमवार **अक्टूबर 16**

सबने पाप किया है

पढ़ें रोमियों 3:23 आज मसीहियों के तौर पर इस अनुच्छेद पर विश्वास करना क्यों इतना सहज है? इसी समय, कुछ लोगों को क्या उकसाता है जो इस प्रसंग की सत्यता पर प्रश्न करते हैं?

आश्चर्यजनक रूप से, कुछ लोग वाकई मनुष्य के पाप के विचार पर ललकारते हैं, तर्क पेश करते हैं कि लोग मूल रूप से अच्छे हैं। समस्या, यद्यपि, समझ की कमी के कारण उत्पन्न होती है कि वास्तविक अच्छाई क्या है। लोग दूसरों से अपनी तुलना करते हैं और स्वयं को बेहत्तर समझने लगते हैं। आखिरकार, हम हमेशा किसी को हमसे बदत्तर पाते हैं ताकि हम स्वयं की तुलना उससे करें। परन्तु वह हमें कदाचित ही अच्छा बनाता है। जब हम स्वयं को परमेश्वर से, और पवित्रता से, और परमेश्वर की धार्मिकता से तुलना करते हैं, तब हम में से कोई अपनी इस नफ़रत और घृणा की पहचान से बच नहीं सकता ।

रोमियों 3:23 भी "परमेश्वर की महिमा" के विषय बातें करता है। वाक्यांश का रूपांतरण विभिन्न तरीके से हुआ है। संभवत: सरलतम रूपांतरण वाक्यांश को अर्थ प्रदान करना है जो 1कुरि० 11:7 में है, "यह परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है।" ग्रीक में "महिमा" के समकक्ष शब्द साधारणत: "स्वरूप" को लिया जाता है। पाप ने मनुष्यों में परमेश्वर के स्वरूप को बिगाड़ दिया है। पापी मनुष्य परमेश्वर की महिमा या स्वरूप को प्रतिबिंबित करने से दूर हो गये।

पढ़ें रोमियों 3:10-18, क्या आज कुछ बदल गया है? कौन-से चित्रण आपको बेहत्तरी से वर्णन करता है, या जो आप होना चाहते हों क्या ये मसीह के लिये आपके जीवन में नहीं था?

जिस तरह हम बुरे हैं हमारी दशा आशारहित नहीं है। पहला कदम यह है कि हम हमारे नितांत पाप को स्वीकार करें और हमारी असहायता को जो हममें है ताकि इसके लिए कुछ करें। इस प्रकार के दोष सिद्धि को लाना पवित्रात्मा का काम है। यदि पापी स्वयं को रोक नहीं सकता आत्मा पापी की अगुवाई करेगा और उसके आत्म-निर्भरता, ढोंग (बहाना), एक स्व-धार्मिकता के मुखौटे को तोड़ डालेगा और स्वयं को मसीह पर समर्पित करेगा/करेगी, उसकी दया की याचना करेगा : "हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर!" (लूका 18:13)

अंतिम बार कब था जब आपने स्वयं पर भला, कठोर, ठण्डी नजर फेरो, आपके विचारों पर, कामों पर एवं आपके एहसास पर? यह बहुत ही व्यथित करने वाला अनुभव हो सकता है, है न? आपकी एक भाग आशा क्या है?

मंगलवार **अक्टूबर 17**

प्रगति?

बीसवीं सदी के मोड़ पर, लोग इस विचार के साथ जीते थे कि मानवता सुधार कर रही थी, कि नैतिकता बढ़ेगी और यह कि विज्ञान एवं तकनीक प्रवेशक (मेहमान) को आदर्श राज्य में मदद करेगा। यह उम्मीद की जाती थी कि मानव प्राणी सिद्धता की ओर अग्रसर था। सही शिक्षा एवं नैतिक प्रशिक्षण के द्वारा यह विश्वास किया जाता था कि मानव स्वयं एवं समाज के लिए महान उपलब्धि हासिल करेगा। यह सब एक साथ होना शुरू हो गया था जब बीसवीं सदी के निडर संसार में हमने प्रवेश किया।

दुर्भाग्यवश, चीजें उस प्रकार नहीं हुई। पूरे इतिहास में बीसवीं सदी बहुत हिंसक और क्रूर रही, धन्यवाद अलंकारिक रूप से काफी है - विज्ञान की प्रगति के लिए उस बड़े भाग को, जिसने दूसरों को बड़े भाग में मारने हेतु इसे बहुत अधिक संभव बना दिया, जिसके लिए बीते काल के पथभ्रष्ट पागल लोगों ने केवल इसके विषय सपना देखा।

समस्या क्या थी?

पढ़ें रोमि० 1:22-32, हम चीजों को किस तरह देखते हैं जो पहली सदी में लिखीं गई थीं जो आज इक्कीसवीं सदी में उजागर हो रही है?

मसीहियत के विषय बहुत-सी चीजों को समझने (मानने) के लिए हमें विश्वास की जरूरत होगी : उनमें से, मृतकों का पुनरुत्थान द्वारा आगमन, नया स्वर्ग और नई पृथ्वी। परन्तु मानव जाति की गिरी हुई दशा में मानने के लिए किसे विश्वास की जरूरत है? आज हम में से, प्रत्येक उस गिरी हुई दशा के नतीजे में जी रहे हैं।

विशेष रूप से रोमियों 1:22,23 पर ध्यान केन्द्रित करें। इस सिद्धांत को अभी उजागार होते हुए हम कैसे देखते हैं? हमारी सदी में मनुष्य ने परमेश्वर को इंकार कर किसे उपासना एवं पूजा करना चाहा है? और ऐसा करने में वे किस प्रकार मूर्ख बन गये हैं? सब्त के दिन अपने जवाब को कक्षा में लायें।

बुधवार **अक्टूबर 18**

यहूदी और अन्यजाति सामान्यतः क्या साझेदारी करते हैं

रोमियों 1 में पौलुस विशेष रूप से अन्यजातियों के पापों, मूर्तिपूजकों, जो लम्बे अंतराल तक परमेश्वर की दृष्टि से ओझल हो चुके थे, और इस प्रकार अति अपमानजनक

अभ्यासों में गिर चुके थे, की चर्चा कर रहा था। परन्तु वह अपने लोगों को, अपने देशवासियों को अंकुश से नहीं छोड़ रहा था। सभी सुविधाएँ उन्हें देने के बावजूद (रोमि० 3:1,2), वे भी पापी थे, जिस प्रकार परमेश्वर की व्यवस्था आदेश "देती थी, और मसीह के बचाये जाने की अनुग्रह की जरूरत थी। उस अर्थ में - पापी होना, परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करना एवं उद्धार के लिए ईश्वरीय अनुग्रह की जरूरत - यहूदी और अन्यजाति एक समान हैं।

पढ़ें रोमियों 2:1-3, 17-24, पौलुस यहाँ पर किसके विरुद्ध चितौनी दे रहा है? इस चितौनी से यहूदी या अन्यजाति, हम सब क्या संदेश लेने चाहिए?

"प्रेरित को यह बताये जाने के बाद कि सभी मूर्तिपूजक पापी हैं; वह अब, खास और बहुत जोरदार तरीके से, दर्शाता है कि यहूदी भी पाप में जीवन-यापन करते हैं, इससे बढ़कर क्योंकि वे व्यवस्था को ऊपरी तौर से मानते हैं, वे शब्द के अनुसार मानते हैं और आत्मा के अनुसार नहीं।" -*मार्टिन लूथर कॉमेन्टरी ऑन रोमनस्, पेज 61* ।

बहुधा दूसरों के पापों को देखना और ध्यान दिलाना बहुत सहज है। ऐसा ही या इससे बुरा करने को हम कितनी बार दोषी हैं? समस्या यह है कि हम अपनी गलती को देखकर आँख बन्द कर देते हैं या दूसरों को देखकर कि वे कितने बुरे हैं अपनी तुलना उनसे करते हैं और हम स्वयं को बेहतर महसूस कराते हैं।

पौलुस के पास वे सभी चीजें नहीं रहेंगी। वह अपने देशवासियों को जल्दबाजी में अन्यजातियों को न्याय न करने की चितौनी देता है, क्योंकि वे,यहूदी चुने हुए लोग भी पापी थे। कुछ मामलों में वे मूर्तिपूजकों से भी अधिक दोषीदार थे। वे दोष लगाने में बहुत जल्दबाज थे क्योंकि यहूदी होने के कारण अन्यजातियों से उन्हें अधिक प्रकाश दिया गया था।

इन सब में पौलुस का तर्क यह है कि हम में से कोई धर्मी नहीं है, हम मेंसे कोई ईश्वरीय मानदण्ड को छू नहीं सकते, हम में से कोई सहज रूप से भला नहीं है या सहज रूप से पवित्र है। यहूदी या अन्यजाति, पुरुष या स्त्री, धर्मी या गरीब, ईश्वर का भय मानने वाला या ईश्वर को अस्वीकार करने वाला, हम सब कोई दोषीदार हैं। और यदि सुसमाचार में परमेश्वर का अनुग्रह प्रगट न होता तो हम में से किसी के लिए आशा न होती।

कितनी बार, अपने मन ही में, स्वयं की गलती के लिए दूसरों को आपने दोष दिया है? यहाँ पर पौलुस के लेख से सतर्कता लेते हुए आप कैसे बदल सकते हैं?

बृहस्पतिवार **अक्टूबर 19**

सुसमाचार और पश्चाताप

"क्या तू उसकी कृपा, और सहनशीलता और धीरज रूपी धन को तुच्छ जानता है? क्या यह नहीं समझता कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन फिराव को सिखाती है?" (रोमि० 2:4)

पश्चात्ताप के संपूर्ण प्रश्न से संबंधित क्या संवाद हमारे लिए यहाँ पर है?

हमें यह समझना चाहिए कि परमेश्वर की अच्छाई पापियों को पश्चाताप के लिए अगुवाई करती है जोर नहीं। परमेश्वर जबर्दस्ती का प्रयोग नहीं करता। वह असीमित धीरजवन्त है और सब लोगों को अपने प्रेम से खींचता है। जबर्दस्ती का पश्चात्ताप, पश्चात्ताप के संपूर्ण उद्देश्य को नष्ट कर देता है, क्या ऐसा नहीं? यदि परमेश्वर पश्चात्ताप को बलपूर्वक करता, तब सब कोई नहीं बचाये जाते, किस लिए वह कुछ को पश्चात्ताप करने के लिए जोर देता और दूसरों को नहीं? पश्चात्ताप एक स्वतंत्र इच्छा होनी चाहिए,

हमारे जीवनों में पवित्रात्मा के हलचल का प्रत्युत्तर होना चाहिए। जी हाँ, पश्चात्ताप परमेश्वर की ओर से एक दान है, पर हमें इसे प्राप्त करने के लिए खुला और तैयार रहना है, एक चुनाव जिसे हम स्वयं के लिए अकेले कर सकते हैं।

उनके पास क्या आता है जो परमेश्वर के प्रेम का विरोध करते हैं, पश्चात्ताप करने से मना करते हैं, और अवज्ञाकारी में रह जाते हैं? रोमि० 2:5-10 ।

रोमियों 2:5-10 में, और प्राय: रोमियों की संपूर्ण किताब में, पौलुस अच्छे कामों के स्थान को महत्त्व देता है। व्यवस्था पालन के बिना विश्वास के द्वारा धार्मिकता का कतई अर्थ नहीं लगाया जाना चाहिए कि मसीही जीवन में अच्छे कामों का कोई स्थान नहीं। उदाहरणार्थ, रोमियो 2:7 में उद्धार की व्याख्या उनके पास आने के जैसा किया गया है जो इसकी खोज करते हैं "जो सुकर्म में स्थिर रह कर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में हैं।" यद्यपि मानव प्रयास उद्धार को नहीं ला सकता, यह उद्धार के संपूर्ण अनुभव का हिस्सा है। यह देखना कठिन है कि कोई किस प्रकार बाइबल पढ़ सकता है और एक विचार के साथ निकल आता है - वह कार्य करता है और कर्म कोई मायने नहीं रखता। सच्चा पश्चात्ताप, स्वेच्छा से हृदय से आता है, यह हमेशा उन चीजों को जीतने के इरादे के साथ आता है जिनपर हमें पश्चात्ताप करने की जरूरत है।

अकसर आप जितनी बार पश्चात्ताप की प्रवृति में रहे हैं? क्या यह सच्चा है या आप अपनी गलतियों को, कमियों को, और पापों - हटाना चाहते हैं? यदि बाद वाला हो तो, आप कैसे बदल सकते हैं? आपको क्यों बदलना चाहिए?

शुक्रवार **अक्टूबर 20**

अतिरिक्त अध्ययन: "इस प्रकार बाइबलीय शब्दावली दर्शाती है कि पाप कोई आपदा नहीं जो लापरवाह मनुष्य पर आ पड़ी, पर मनुष्य द्वारा सक्रिय प्रवृति और चुनाव के फलस्वरूप है। इसके अतिरिक्त पाप अच्छाई की अनुपस्थिति नहीं, परन्तु यह परमेश्वर की आपेक्षाओं में खरा न उतरना है। यह एक बुरा दौर है जिसे मनुष्य ने जानबूझ कर चुना है। यह एक कमजोरी नहीं है जिसके लिए मनुष्य को जिम्मेदार न ठहराया जाय, क्योंकि मनुष्य प्रवृति में या पाप के कृत्य में जान-बूझकर परमेश्वर के विरोध में विद्रोह का रास्ता चुन लेता है, उसकी आज्ञा का उल्लंघन करता है और परमेश्वर के वचन को सुनने से चूक जाता है। परमेश्वर ने जिन सीमाओं को तय किया है पाप उसके पार जाने का प्रयास करता है। संक्षिप्त में पाप परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह है।" *द हैंड बुक ऑफ सेवेंथ डे ऐडवेंटिस्ट थ्योलोजी, पेज 239 ।*

"संसार के हालात की भयंकर तस्वीर मेरे सामने पेश की गई है। अनैतिकता हर ओर फैलती है। स्वेच्छाचारिता इस युग का खास पाप है। पाप ने साहस के साथ अपना विकृत सिर कभी ऊँचा नहीं किया जैसा अभी है। लोग स्वार्थी लगते हैं, और सद्गुण और सच्ची भलाई के प्रेमी लगभग इसकी निडरता, ताकत और व्यापकता के द्वारा हतोत्साहित किये जाते हैं। दुष्टता जो हर ओर फैलती है केवल अविश्वासी और हंसी उड़ाने वाले को कैद नहीं करता है। यदि ऐसा मामला होता पर ऐसा नहीं है। बहुत से पुरुष और स्त्री जो मसीह के धर्म की वकालत करते हैं अपराधी हैं। इतना तक कि जो उसके प्रकट होने को देखने की वकालत करते हैं उस घटना के लिए स्वयं शैतान की अपेक्षा तैयार नहीं है। वे सभी प्रदूषण (पाप) से स्वयं की सफाई नहीं कर रहे हैं। उन्होंने इतने लम्बे समय तक अपनी वासना की सेवा की है कि दूषित होना उनके विचारों में स्वाभाविक है और उनकी कल्पना शक्ति भ्रष्ट हो जाती है।" *एलेन जी० ह्वाईट, टेस्टीमोनीज फोर द चर्च बॉल्यूम 2, पेज 346* ।

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न :

- उन्हें आप क्या जवाब देते हैं, जो सब कुछ होने के बावजूद जोर देते हैं कि मानवता में सुधार हो रहा है? वे क्या तर्क देते हैं, और आप उन्हें क्या प्रत्युत्तर देते हैं?
- शुक्रवार के अध्ययन में एलेन जी० ह्वाईट की टिप्पणी को देखें। यदि आप स्वयं को वहाँ पर पाते हैं तो, जवाब क्या है? यह क्यों महत्त्वपूर्ण है हताशा में छोड़ नहीं देना चाहिए परन्तु परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को दावा करना चाहिए - पहला क्षमा के लिए, दूसरा शुद्धिकरण के लिए? वह कौन है जो आप से चाहता है कि एक बार कहें "यह कोई काम का नहीं। मैं बहुत भ्रष्ट हो गया हूँ। मैं कभी बचाया नहीं जा सकता, अत: मुझे छोड़ देना चाहिए"? क्या आप उसे सुनेंगे या यीशु को, हम से कौन कहेगा, "मैं भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं देता; जा और फिर पाप न करना"? यूहन्ना 8:11 ।
- हम मसीहियों के तौर पर मुनष्य के मूल पाप और भ्रष्टता को समझने के लिए यह क्यों इतना जरूरी है? क्या होगा जब हम उस दु:खद परन्तु सच्ची वास्तविकता के दर्शन को खो देते हैं? कौन-सी गलतियाँ हमारी वास्तविक दशा की झूठी समझ की ओर हमें ले रही है?
- असंख्य प्रोटेस्टेन्टों के विषय सोचें जिन्होंने अपने विश्वास से त्यागने के बजाय मरना चुना। हम विश्वास में कितने मजबूत हैं? क्या उतने मजबूत हैं कि इसके लिए जान दे सकते हैं?